रात्रि क्लास 19/10/68 ओमशान्ति शिवबाबा और वरसा याद है?

बच्चों को समाचार सुनाने वाला तो है बेहद का बाप। बेहद का बाप बेहद का समाचार सुनाने वाला। जो कोई समझा न सके। ऊपर मूलवतन से लेकर फिर सूक्ष्मवतन का भी समाचार सुनाते हैं। समझाते हैं सूक्ष्मवतन में कुछ है नहीं। सिर्फ सा0 है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर वहाँ सूक्ष्मवतन में हो नहीं सकते। वह सिर्फ है सा०। ब्रह्मा का भी सा० होता है अव्यक्त का। व्यक्त का भी दिखाया जाता है। झाड़ के पिछाड़ी में ब्रह्मा खड़ा है जब कि झाड़ जड़–जड़ीभूत है। और फिर कहते हैं ब्रह्मा देवता.....वही जो तमोप्रधान बनता है वही फिर तपस्या कर सतोप्रधान बनते हैं। जब कि फरिश्ता बन जाते हैं तो फिर सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं। देवताएँ तो सिर्फ सतयुग में होते हैं। डीटी रीलिजन है ही सतयुग में। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। तुम बच्चे तो भक्तिमार्ग से निकल आये हो। ब्रह्मा की अथवा ब्राह्मणों की रात। फिर ब्राह्मणों का दिन नहीं कहेंगे। फिर वही ब्राह्मण देवता बन दिन में जाते हैं। बाप आते हैं रात में। भक्ति की रात, ज्ञान का दिन ज्ञान से दिन। ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। भक्ति में अज्ञान है इसलिए बाप आकर सद्गति करते हैं। यह है दिन और रात का खेल। सतयुग में है एक भाषा। अभी तो कितनी अनेकानेक भाषाएँ हैं। बच्चों को समझना है हम पराये राज्य में थे। हमने अपना राज्य गंवाया। हमारे राज्य में एक भाषा एक धर्म था। बच्चे अच्छी तरह जानते हैं अपना राज्य हम स्थापन कर रहे हैं। कल्प2 करते हैं। तुम बच्चे श्रीमत पर सुखधाम स्थापन कर रहे हो। दुखहर्ता, सुखकर्ता यह बाप की ही महिमा है। दुख कलियुग में, सुख सतयुग में। अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग। है भी यह गीता गाया हुआ मैं कल्प के पुरु0 संगमयुगे आता हूँ। युगे2 नहीं। पुरुषोत्तम संगमयुगे। यह है बेहद की पाठशाला। समझते हैं स्टुडेन्ट्स हम सभी नम्बरवार ही पास होंगे। राजधानी में नम्बरवार होते हैं ना। यहाँ भी नम्बरवार हैं। वह है मृत्युलोक। तुम अमरलोक में जाने पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम सभी ब्राइड्स हो। बाप ब्राइडग्रुम है। तुम सभी बच्चों को बाप श्रृंगार, सजाकर कहाँ से कहाँ ले जाते हैं। विष्णुपुरी है ससुरघर। यह है पियर घर। सतयुग में होता है एक बाप। फिर द्वापर में होते हैं दो बाप। सतयुग में तो पारलौकिक बाप को याद नहीं करते हैं। भक्तिमार्ग में दो बाप हो जाते हैं। अभी संगमयुग पर तुमको तीन बाप। पारलौकिक लौकिक अलौकिक। सतयुग में सुख ही सुख है। पारलौकिक बाप से सुख मिला था तब ही उनको पुकारते हैं कि आकर पावन बनाओ। बाकी प्रजापिता ब्रह्मा अलौकिक बाप से कोई वरसा नहीं मिलता। पारलौकिक बाप से 21 जन्म सुख का वरसा मिलता है। लौकिक बाप से तो दुख का ही मिलता है। यह है सभी वन्डरफुल बातें। बाबा भी वन्डरफुल है। वह सभी आत्माओं का बाप है। आकर के सारी दुनिया को नया बनवाते हैं तुम बच्चों से। गीता में तो रॉंग लिखा हुआ है। तुम बच्चे कोई हिंसा नहीं करते हो। तुम हो डबल अहिंसक। पहले डबल हिंसक थे। विकार में जाना बड़ी हिंसा है जिससे जन्म–जन्मान्तर दुख होता है। यह सभी अभी तुम बच्चे समझते हो। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग से कोई भी सद्गति को नहीं पा सकते। उनसे गिरते हैं। भक्तिमार्ग दुर्गति मार्ग है। तुम कोई को बोलो तो बिगड़ पड़ेंगे। बड़ी ही युक्ति से समझाना होता है। नहीं तो तुमको नास्तिक समझते हैं। मैडचेप्स समझते। तुम फिर उनको डबल मैडचेप्स समझते हो। समझने की बातें हैं ना। माया रावण का प्रभाव भी देखो कितना है। कितने बड़े2 महल आदि हैं। यह सभी हैं माया का पॉम्प। माया कशिश करती है। जो धनवान हैं वह समझते हैं हम तो स्वर्ग में हैं। बाबा फिर कहते अच्छा तुम इस स्वर्ग की खुशी में रहो। मैं हूँ ही गरीब निवाज़। बाप भी गरीब निवाज है। सोने की चिड़ियाँ थी। अभी आयरन एजेड है। यह बातें भी तुम समझते हो। मनुष्य तो लाखों वर्ष कह देते हैं। घोर अंधियारे में है ना। इसलिए गाया जाता है ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। तुम बच्चे अपना दिन स्थापन कर रहे हो। जहाँ कोई धक्के आदि खाने की बात ही नहीं। बाप आते हैं भक्ति का फल देने। तुम बच्चे क्या से क्या बन रहे हो। आगे भक्ति करते थे। एमऑबजेक्ट का थोड़े ही पता था। अभी तो बाप कहते हैं तुमको यह बनने का है। यह है एम ऑबजेक्ट सत्य ना0 की कथा है ना। सभी तो नर से ना0 बन न सके। भक्तिमार्ग की बातें ही अलग है। वह है रात। यह

है दिन में जाने का ज्ञान। वह सत्य ना0 की कथा वा गीता सुनते नीचे ही गिरते आये हो। प्रभाव कितना है हजारों मनुष्य जाते हैं सुनने लिए। वह अर्थ बैठ रसीला कर सुनाते हैं तो ढेर जाते हैं। गीतापाठी तो बहुत ही होंगे। जिन्होंने गीता पढ़ी होगी। अभी बाप से डायरैक्ट राजयोग सीखते हो। वह है भक्ति मार्ग के लिए मनुष्यों की बनाई हुई गीता। बाप कोई शास्त्र थोड़े ही पढ़ते हैं। शिवबाबा शास्त्र पढ़ते हैं? दादा पढ़ते हैं? पहले बहुत पढ़ते थे। सुनी भी है, सुनाई भी है; परन्तु अभी समझते हैं सभी झूठ ही झूठ था। अभी झूठ खण्ड को तुम श्रीमत पर सच खण्ड अथवा स्वर्ग बना रहे हो। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे तुम ही पद पावेंगे। जितना जो याद में रहेंगे चक्र फिरावेंगे तुम ही स्वर्ग के मालिक बनेंगे। हम तो आये हैं पढ़ाने। तुम जानते हो बाबा पढ़ाकर नई दुनिया में ले जावेंगे। तो सद्गुरु ठहरा ना; परन्तु माया घड़ी2 भुला देती है। यह है युद्ध। तब बाप कहते हैं डरो मत। पिछाड़ी तक तूफान आवेंगे। एक संकल्प विकल्प होते हैं, दूसरी अच्छी होती है। विकल्प आये तो कर्मइन्द्रियों से कुछ न करो। अच्छा संकल्प भल आये। तूफान तो बहुत आवेंगे। जैसे वैद्य दवाई करते हैं कहते हैं बीमारी उथलेगी। तुम डरना नहीं। फिर कोई छोड़ देते हैं। यहाँ भी कहते हैं कितने तूफान आते हैं जो कब न आया। ज्ञान में आने बाद माया बहुत तूफान में लाती है। हाँ इसमें डरना न है। महावीर बनो। तुम बच्चे ही महावीर हो। कितनी भी तूफान आये अचल अडोल अखण्ड रहना है। यह भी अभी खुशी है हम अखण्ड राज्य स्थापन कर रहे हैं। कोई हाथ–पांव नहीं चलाते। लड़ाई की बात नहीं। सिर्फ अपने स्वीट मीठे बाप को याद करना है। जो ही तुम आत्माओं को पढ़ाते हैं। यहाँ बैठते हो तो भी अपन को आत्मा समझो। बाप कितना समझाते हैं जो कब कोई समझा न सके। आत्मा कितनी छोटी है। सा0 होता है वह भी पुरुषार्थ कराने लिए। सा0 से कोई न वन जावेंगे। समझ है हमारे में छोटी सी आत्मा है उनका पार्ट भरा हुआ है। ड्रामा के ढेर एक्टर्स हैं। सभी को पार्ट मिला हुआ है। सभी एक्टर्स हैं। सभी आत्माओं को पार्ट मिला हुआ है अनादि। शास्त्रों में यह बातें नहीं है। शास्त्रों में है धूकेबाज। दर दर धक्का खाते हैं। वेद शास्त्र कितने भी पढ़े हुए हो; परन्तु भगवान किसको भी मिलता नहीं। वह सब समझते हैं यह सभी भगवान से मिलने के रास्ते हैं। बाप समझाते हैं यह सभी भक्तिमार्ग में अनेक उपाय बताते हैं। बाप कहते हैं उपाय एक ही है। ज्ञान–भक्ति–वैराग्य। अभी तुम हो संगमयुग पर। उस तरफ कितने थोड़े मनुष्य होंगे। बाकी सभी आत्माएँ शान्तिधाम में चली जावेंगी। तुम वाया शान्तिधाम सुखधाम चले जावेंगे। तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिला हुआ है यह कौन है। यह कौन है। तुम सारे विश्व में शान्ति स्थापन करते हो। तो तुमको यह ल0ना0 का प्राइज मिलती है। तुम यह बनते हो ना। बाप ने समझाया है पिछाड़ी में सन्यासियों आदि पर जीत पावेंगे। अभी उनके पिछाड़ी पड़ने कोशिश भी मत करो। उनके फॉलोअर्स सभी कहेंगे इनको जादू लगा है। उन्हों के उठने का अभी समय नहीं है। तुम्हारी आस्ते2 राजधानी जमती जावेगी। अनेक बार तुमने राज्य किया है। और फिर गंवाया है। कैसे राजधानी ली है वह भी जानते जाते हो। दिन प्रतिदिन एड हो जाते हैं; परन्तु माया तूफान में ले आती है तो छण जाते हैं। संगदोष गिरा देती है। तुम बच्चे यहाँ आते हो बाप, टीचर, गुरु पास सम्मुख रिफ्रेश होकर जावें। दिल होती है चटक कर बैठ जावें; परन्तु नहीं। वह फिर सन्यास हो जावेगा। गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान पवित्र रहना है। अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करना है। पुरानी दुनिया को भूल जाना है। बुद्धि से भूल जाना है। अच्छा बच्चों को बापदादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।

डायरैक्शनः– बाप दादा कहे कि बच्चों को कोई भी त्योहार पर, शिवजयन्ती अथवा दीपावली, जन्माष्ठमी आदि कोई भी त्योहार पर मधुबन में तार भेजने की दरकार नहीं है।

2. कभी भी टेलीफोन पर पर्सनल पिताश्री के नाम पर ट्रंकाल नहीं करना है। बाप दादा तो कब फोन पर ज़ोर से बात करते नहीं हैं। ऑर्डीनरी काल होने से भी बापदादा तो कहाँ से भी फौरन फोन पर आ ही जाते हैं।